ओम् शान्ति 22-4-12 मधुबन

प्राण अव्यक्त बापदादा का मधुर सन्देश (दादी गुल्जार)

आज अमृतवेले योग में बैठी थी तो बापदादा ने अपने पास बुला लिया। मैं भी सदा के सदृश्य आप सबकी याद लेते हुए पहुंच गई। तो क्या देखा कि जैसे सूर्य की किरणों की सकाश स्वत: ही चारों ओर फैल जाती है, ऐसे बापदादा की सर्व शक्तियों की किरणें सर्व बच्चों पर पड़ रही थी। सर्व बच्चों का वायुमण्डल बहुत प्रसन्नता का बन रहा था। कुछ समय तो मैं भी बाबा के साथ उसी शक्तिशाली स्थिति के अनुभव में समा गई। थोड़े समय बाद बाबा की दृष्टि मेरे ऊपर पड़ी और बाबा मुस्कराये और बोले, ''आओ मेरी दिलतख्तनशीन राजदुलारी बच्ची आओ।'' यह परमात्म मिलन का अतीन्द्रिय सुख तो केवल अनुभवी ही जानें। मैं तो अति अमूल्य बाहों के झूले में झूल रही थी। थोड़े समय के बाद बाबा बोले, बच्ची मधुबन का समाचार क्या चल रहा है? मैं बोली बाबा अब मीटिंग वाले गये और अभी एकाउन्ट वाले आ रहे हैं। ऊपर नीचे कोई न कोई सेवा तो चलती रहती है। बापदादा समाचार सुनते बहुत खुश हुए। ऐसे लगा जैसे बापदादा के सामने सर्व बच्चे इमर्ज हो गये और बापदादा बच्चों से बात कर रहे थे। यह दृश्य भी अति प्यारा था। बाबा बोले, बापदादा देखते हैं कि बच्चों को उमंग आता भी है कि बस अब तो बाबा को करके ही दिखायेंगे, बनके ही दिखायेंगे लेकिन यह परिवर्तन का उमंग सदा नहीं रहता। उसका कारण भिन्न-भिन्न सर्व स्वमान को सदा दिल से अनुभव कर अनुभवी मूर्त कम बनते हैं। जानते हैं, समझते भी हैं लेकिन दिल से रियलाइज़ कर अनुभव के नशे में रहना, वह कम रहते हैं। दूसरा अपनी छोटी मोटी कमजोरियों को जानते हैं लेकिन दिल से रियलाइज नहीं करते, चला लेते हैं, अलबेलेपन से टाल देते हैं, यह तो चलता ही है, होता ही है, ठीक हो जायेगा.... लेकिन अब समय प्रमाण **दिल में कमजोरी की लीकेज महसूस होनी चाहिए कि अब बदलना ही है और बदलने का वायुमण्डल बनाना ही है।** यह नहीं बदलते लेकिन मुझे बदलकर बदलाना है। बापदादा इस बात पर मुस्कराते हैं, समझदार बच्चे समझते भी हैं कि यह बुरी चीज़ है, तो क्या बुरी चीज़ को दिल में सम्भालना नॉलेजफुल बच्चों का काम है? उसके बाद बाबा बोले, आज बच्चों पर बहुत स्नेह आ रहा है। बाप ने तो हर बच्चे को जन्मते ही मास्टर सर्वशक्तिवान भव का वरदान दिया है। तो उन शक्तियों को, प्राप्त हुए वरदानों को वरदान के रूप में कार्य में लगाओ। हर शक्ति को वरदाता के वरदान के स्मृति स्वरूप बन आप आर्डर करो तो हर शक्ति समय पर न आये, यह हो नहीं सकता है। ऐसे कहते बापदादा को हर बच्चे प्रति इतना प्यार इमर्ज था, वह तो दृश्य देखने वाला ही था।

उसके बाद बाबा को मीटिंग का समाचार सुनाया कि बाबा मीटिंग बहुत अच्छी रही। तो बाबा ने कहा कि यह आपस में मिलना जरूरी है लेकिन जो वी.आई.पी. का प्रोग्राम मधुबन में बनाया है, उस पर बापदादा का विचार है कि हर एक ज़ोन पहले अपने ही ज़ोन में जहाँ बड़ा स्थान है, वहाँ अपने सब ज़ोन के वी.आई.पीज को इकट्ठा करे तो अनुभव हो जाए कि कितने और किस क्वालिटी वाले हैं। अगर कोई ज़ोन के सेन्टर बहुत दूर दूर हैं तो वह दो स्थान फिक्स करे तो मालूम पड़ जाए कि क्या क्वालिटी है और कितने आने वाले हैं। उन्हों को टैम्पटेशन मधुबन की पहले देवें लेकिन पहले वहाँ इकट्ठे हों और सबको बाप की विशेष पहचान और मधुबन की विशेषतायें सब सुनायें तो वे यहाँ से ज्यादा लाभ उठा सकेंगे। ऐसे इशारा देते बापदादा ने सब निमित्त सेवाधारियों को बहुत-बहुत दिल की याद और प्यार दिया। हमें भी दृष्टि देते हुए स्थूल वतन में भेज दिया। ओम् शान्ति